

अर्थ विज्ञान

भाषा के मुख्य रूप से चार तत्त्व हैं- ध्वनि, पद, अर्थ और वाक्य । भाषा विज्ञान इन चारों के आधार पर ही भाषा का अध्ययन करता है । यहाँ हम अर्थविज्ञान पर विचार करेंगे । अर्थ विज्ञान के नाम से ही स्पष्ट है कि अर्थ का विज्ञान ।

अर्थ की परिभाषा देते हुए कहा गया है कि शब्द के उच्चारण करते ही जिस ज्ञान की प्रतीति होती है उसे अर्थ कहा जाता है । उसे उस शब्द का अर्थ कहा जाता है । शब्द और अर्थ का नित्य संबंध होता है । नित्य संबंध से तात्पर्य है एक के बिना दूसरे के अस्तित्व का न पाया जाना । जैसे तंतु और वस्त्र । शब्द विशिष्ट अर्थों के प्रतीक होते हैं और उन शब्दों का प्रयोग प्रायः उन्हीं अर्थों के लिए किया जाता है जो अनादि काल से चले आ रहे हैं ।

अर्थ परिवर्तन

परिवर्तन और विकास सृष्टि का नियम है । मनुष्य के मन और विचारों में निरंतर परिवर्तन होता रहता है । इसी कारण भाषा के शब्दों और अर्थों में भी परिवर्तन होता है । यह अर्थ परिवर्तन तीन दिशाओं में संभव होता है-

(क) अर्थ विस्तार- जब कोई शब्द सीमित क्षेत्र से निकलकर व्यापक अर्थ में आ जाता है उसे अर्थ विस्तार कहते हैं । जैसे 'तेल' शब्द का प्रयोग पहले तिल के तेल के लिए होता था परंतु अब व्यापक अर्थ में हर प्रकार के तेल के लिए प्रयुक्त होता है । इसी प्रकार स्याही आदि अन्य शब्द भी हैं जिनके अर्थ विस्तृत हो गए हैं ।

(ख) अर्थ संकोच- अर्थ परिवर्तन की दूसरी दिशा अर्थ संकोच हैं । कभी-कभी अर्थ संकुचित भी हो जाते हैं । 'मृग' शब्द पहले जंगल के सभी जानवरों को कहते थे परंतु आज केवल हिरन के अर्थ में यह संकुचित हो गया है ।

(ग) अर्थदिश- इसमें पहले अर्थ का लोप हो जाता है, और वह दूसरी वस्तु का अर्थ देने लगता है । जैसे 'असुर' शब्द पहले देवताओं के लिए प्रयुक्त होता था परंतु अब राक्षसों के अर्थ में प्रयुक्त होता है । यह अर्थ परिवर्तन भी दो प्रकार का है- अर्थापकर्ष तथा अर्थोत्कर्ष । जहां अच्छे अर्थ को छोड़कर बुरे अर्थ में प्रयुक्त होने लगता है उसे अर्थापकर्ष कहा जाता है जैसे 'जुगुप्सा' अर्थात् घृणा शब्द पहले गुप् धातु से छिपाने के अर्थ में प्रयुक्त होता था परंतु अब

घृणा का वाचक है। इसमें अर्थ का अपकर्ष हुआ है। जहां बुरे अर्थ को छोड़कर अच्छे अर्थ में प्रयोग होने लगता है उसे अर्थोत्कर्ष कहा जाता है। जैसे साहस शब्द का प्रयोग पहले हत्या, व्यभिविचार आदि बुरे अर्थ में प्रयुक्त होता था परंतु आज हिम्मती आदि अच्छे अर्थ में प्रयोग में लाया जाता है। यहां अर्थ का उत्कर्ष पाया जा रहा है।

अर्थ परिवर्तन के कारण- भाषा निरंतर परिवर्तनशील है जैसे भाषा का विकास होता है वैसे वैसे अर्थ की भूमिका का भी विकास होता है। शब्द एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हैं। अर्थ परिवर्तन के मूल कारण निम्न हैं-

(क) बल का अपसरण- बल का अर्थ है जोर देना और अपसरण का अर्थ है हटना। पहले एक अर्थ पर बल दिया जाता था बाद में उस अर्थ की ओर ध्यान कम दिया जाने लगा और दूसरे अर्थ पर अधिक। जैसे वैदिक काल में 'अरी' शब्द का अर्थ शत्रु, घर, ईश्वर और धार्मिक अर्थ में भी प्रयुक्त होता था परंतु 'अरी' शत्रु मात्र के लिए है।

(ख) भौगोलिक वातावरण- भौगोलिक वातावरण में परिवर्तन आने से कई बार शब्दों में परिवर्तन आ जाता है। नए स्थान पर जाने से पुराने शब्द नए पदार्थों के लिए प्रयुक्त होने लगते हैं और भाषा का अर्थ बदल जाता है, जैसे वेदों में 'उष्ट्र' शब्द भैंस के लिए प्रयुक्त होता था तथा परंतु बाद में यह 'ऊंट' के लिए होने लगा क्योंकि आर्य लोग पहले जिस प्रदेश में रहते थे वहां ऊंट नहीं थे।

(ग) सामाजिक वातावरण- सामाजिक वातावरण बदलने के कारण ही अर्थ में परिवर्तन आ जाता है। जैसे माता, पिता, भाई, बहन के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द फादर, मदर, ब्रदर, सिस्टर आदि। इस अर्थ परिवर्तन का कारण सामाजिक वातावरण का बदलाव है।

(घ) भौतिक वातावरण- वातावरण बदल जाने से जैसे-जैसे साधन बदल जाते हैं वैसे वस्तुओं के नाम भी बदल जाते हैं। जैसे पहले 'ग्लास' शब्द शीशे से बनी वस्तुओं का वाचक था। किंतु बाद में हर धातु से बने पीने के पात्र का वाचक हो गया।

(ङ) अधिक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग- मनुष्य सरलता प्रेमी है और हमेशा कठिनाई से बचना चाहता है। इसी कारण सरलता से विचरण करने पर शब्दों के

अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। जैसे 'नैकटाई' के स्थान पर टाई, 'रेलवे स्टेशन' के स्थान पर स्टेशन, 'मोटरबाइक' के स्थान पर बाइक आदि। इसके कारण शेष अंश से ही पूरे शब्द का अर्थ मिल जाता है। जिससे अर्थ में परिवर्तन आ जाता है।

(च) अशोभन के स्थान पर शोभन- हर समाज में सभ्यता के अपने-अपने मापदंड है। प्रत्येक व्यक्ति अशुभ से दूर रहना चाहता है और व अशुभ शब्दों के स्थान पर शुभ शब्दों का प्रयोग करता है जैसे 'मृत्यु' के स्थान पर स्वर्ग सिद्धांत और वीरगति को प्राप्त होना आदि। इससे ये शब्द अपना मूल अर्थ छोड़कर दूसरे अर्थ में ही प्रयुक्त होने लगते हैं।

(छ) नवीन वस्तुओं का निर्माण- जब नई वस्तुओं का निर्माण होता है और जिस सामग्री से वह वस्तु बनी होती है उसका ही नाम प्रचलित हो जाता है। जिसके कारण अर्थ में भी परिवर्तन आ जाता है, पहले लिखने का कार्य पक्षियों के पंखों से होता था, जिसे लैटिन भाषा में 'पेन' कहा जाता है, परंतु आज लोहे की कलम को भी पेन कहते हैं।

(ज) अज्ञान- भाषा में अर्थ परिवर्तन का एक बहुत बड़ा कारण अज्ञानता है। अनेक बार अर्थ समझे बिना ही अशुद्ध प्रयोग होने लगता है जैसे 'बेफजूल' शब्द का प्रयोग व्यर्थ के लिए किया जाता है।

(झ) अलंकारिक प्रयोग- भाषा में शिष्टाचार और नम्रता लाने के लिए किए गए शब्दों के प्रयोग से भिन्न अर्थ में परिवर्तन आ जाता है। जैसे- अंधे के लिए सूरदास, घर के लिए गरीबखाना, मूर्ख के लिए गधा आदि।

(ञ) पुनरावृत्ति- जहां एक ही अर्थ देने वाले अनेक शब्दों का प्रयोग एक साथ किया जाता है। वहां यह पुनरावृत्ति अर्थ वाली हो जाती है जैसे 'सज्जन पुरुष' में पुरुष शब्द की पुनरावृत्ति है, 'विंध्यचल पर्वत' में पर्वत शब्द की आवृत्ति आदि के द्वारा अर्थ में परिवर्तन आ गया।

(ट) अन्य भाषाओं का प्रभाव- मनुष्य समाज में एक स्थान पर नहीं रहता। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति जैसे शिक्षा, नौकरी आदि के लिए स्थान परिवर्तन करना पड़ता है। इससे वह दूसरी भाषा को बोलने वाले समुदाय के संपर्क में आता है, विचारों और शब्दों के

आदान-प्रदान से शब्दों के अर्थ में भी परिवर्तन आ जाता है । जैसे फारसी में 'मुर्ग' शब्द का अर्थ पक्षी है हिंदी में आने पर यह एक विशेष पक्षी वाचक है ।

(ठ) व्यंग्य- व्यंग्य के कारण शब्द अपना अर्थ छोड़कर दूसरे अर्थ की अभिव्यक्ति करने लगते हैं । जैसे 'चार आंख वाला' इन शब्दों का प्रयोग कम देखने वाले के लिए व्यंग्य रूप में किया जाता है । इस प्रकार अर्थ परिवर्तन के अनेक कारण हैं जिनके कारण अर्थ विस्तार, अर्थ संकोच और अर्थदिश आदि परिवर्तन भाषा में देखने को मिलते हैं ।